

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमांक

१९५६०

ग्रंथ नाम

विषय

कथा पुराणे.



क्र. नं. १०

मराठी

पुराण ✓

६१०.१५९९

मुक्तेश्वर आदिपर्व



श्रीगणेशाय नमः ॥ देवोनी नं
गारागरमणीये रूप ॥ १ ॥ शो गा वा क
जावा अती युती ॥ १ ॥ सा धामं या गु ह
नी श्री ली यत् ॥ यां सी धी सा धी नी सा धी र ॥ १ ॥
सा धी र ॥ २ ॥ हो सा ना ज्ञा आ सा हरे ॥ म् प्रो ये र म ह वां क पे च
तुरे ॥ दृष्टि ने लु सा पं च रां ॥ इ ह र व र्णो म ह ठे ॥ १ ॥ ले प्रो वी
द व्वा जी रा ती ॥ ग त्रे च य वा यां प ती ॥ मु छी त हो उ ती
प ड तां क्षी ती ॥ धै र्ये त नु र व ती ॥ ४ ॥ म नो वे द्ये रा हो नी हा त
ओ व ध र्म धी रं स मी प म यो ॥ तु वां हो उ ती ह र पा यु क्त ॥ उ ता र
श्रे ण पा ही जे ॥ ७ ॥ दे उ ती यां आ ध र पा का ॥ उ प जी ह ह र च म ह
न बा पा ॥ दे उ ती द ट आ की ग पा ॥ सं त म् प्र म उ तो नी व वा वे ॥ ९

आसी ०१)

(२)

आ. १६

मैकोनी राजमुखीची गोष्टी ॥ सार साक्षीचां पेगोर दी ॥ बचन
 सुमनी श्रवणपुष्टी ॥ पुजीती जाकी नटपाते ॥ ७१ ॥ घरा घरी श्रा
 घर्मपावा ॥ तुझी वा मुझ मया चढा ॥ कीर्ती मिंगे रवी मंडळा ॥
 फेडुनी गेवी लुहोजे ॥ ७२ ॥ फुफुंरु कुडी टा घेउनी हाती ॥ ताते घडनी
 आमरपती ॥ होउं वा हासी मासी येन ती ॥ आयुक्त जे सै ही सता
 हा ॥ ७३ ॥ अमो म्हातम जो हवा हवा हवा सीता सा चेशोपा प्रवा ॥ वा
 कर्म पागेनी घरी तां व्याळ ॥ अर्थ वा जे तो रजा ॥ ७४ ॥ आतां घरी
 माजी संगती ॥ अहीन कुं मनी मनी ॥ मातवा काम भद्र जाती ॥
 वीचकां कुटोवळावा ॥ ७५ ॥ राजा म्हाजे रन म्हाती ये ॥ घोषी वी
 सीती लुके परमनी ने ॥ परश्री अशी वा ॥ ७६ ॥
 मानवे ॥ ७७ ॥ परश्री अशी परश्री ॥
 मन ॥ तो जीतांची प्रेत जाया ॥



28

हासीसंगवरीदारीद्री॥ यहाथनवेस
 पमानारी॥ सर्वहारीमुळांगका॥१६॥
 का॥ हातीचेउनीमुमनमाका॥ घावी
 आंतुसीसुजापो॥१७॥ सर्वराजस्येसंपता॥
 सीजीजगती॥१८॥ जीजेसीआसरावती॥ राचीभोगीईदीरंसी
 आमोउपरतसुवपीपदरी॥ जोउपगोभादावीउकी॥ तेवी
 वेसोनीममांदी॥ शुषपावभोगपो॥१९॥ चरेचेदेरापा
 कसमग॥ जोरुनीयांउमवरा॥ उभिरहातीसजसमोरे॥
 हाचेनमस्यारफ्रीपारी॥२०॥ हाकुंतकाबोछेवचण॥ वी
 धीमुक्तनकतोषापीग्रहण॥ आकीचारेखउगीमांमैथुन
 आथःपतणदोघासी॥२१॥ नृपसुणेचलुरभरीतें॥ वीरा
 काहीउबण्येसरीतें॥ वीधीच्यारीवीनाहातें॥ यतलातीहा

आदी०॥

3

प्रार्थी॥ २०॥ मधुपर्कवीधीपापोग्रहण॥ वेदोक्ती करी ली
 पापोग्रहण॥ मन्त्रोतीजे स्वयं वरपाण॥ लेही छष्टपाआ
 वधारी॥ २१॥ मेळउपी भुपावु मसफळ॥ वधुनी रक्षुनी
 भुपावु॥ समपाउद्याती छमावा॥ हे मन्त्रवर्तुजापो॥ २२
 होकी देवे सवळ॥ मुष्ट्यनरुनी मांळं वळ॥ जीरुनी उरापीजे
 वेवहाळ॥ स्वगीछगमाकावे॥ २३॥ अतो पंचभुतं हृदयदा
 सी॥ पंचप्राणदिश्रीयेसी॥ शिती उपी देहे प्रदेसी॥ अाधीदे
 वतस्थापीले॥ २४॥ सुर्मन्त्रावु सुखावे॥ घटीकाप्रली
 छीवीसुवेळ॥ चणेछागती पळे पळे॥ प्रीतीजीवने भरीलाते॥
 नेतुरे ये मणे सपाहा॥ दोजीछासेवासी॥
 च्चीमंगळमंत्र॥ आरंभीवासा२२॥
 त्रपाटा॥ वाठ वेळधरीवा आसे बळ

०२०१६

2

3A

४॥ आलीसममोवतलां ॥ २७ ॥ तोसारा नी
 यहीपुढारीसरूपो ॥ ऐसपभावे मोपुंय ॥
 १॥ २८ ॥ तोपोगंधर्वकीधीनें वरीत ॥ पुरवीभाते
 मजसमथाविगीउचीत ॥ आचोगदेईआपुछें ॥ २९ ॥ प्रेजीव
 जेचीकंचुकी ॥ हृदयवोपीमजरसकी ॥ कीकव्यवृतीच्या
 नेकी ॥ नीरीमापरीपरीसा ॥ ३० ॥ ऐसेबोवतांछरारमया ॥
 हाकुंतावाहांस्येवदना ॥ मुजावतांमजबचपा ॥ नीयेमाची
 माआवधारी ॥ ३१ ॥ वृसीनीवरीसापोरी ॥ पुत्रजनेउ
 तोचीपृष्टी ॥ राजधरुजसगो ॥ पदाधीकारीकुंकरणे ॥ ३२
 ऐसीमानेमाहेनीभाके ॥ तरीधरुनारथडोसांसुरवे ॥ हृदयेको
 नीआसंतहरीवे ॥ राजासरुपुठारा ॥ ३३ ॥ हसोंधरुनी
 हस्ता ॥ हेताजावात्रीमारभाका ॥ लुसापुत्रनीजनीछंन ॥

आंटी १)

५

माज्यासनी वीराजे ॥ ३४ ॥ हे माझे त्रती सा वचना ॥ भंगो नस सा ॥ १९
केच लुनानन ॥ प्रेजेनी आग्रहाचें वसन ॥ सागुणी भावें आ
नुसरणी ॥ ३५ ॥ सोडुनी मां हृदयग्रंथी ॥ तनुमन दीघले वल
भाहली ॥ उठे वटी वें ले मुक्ती ॥ बाबतांच लुरी वारी वें ॥ ३६ ॥
पुरुषा मनोरथाचा फोडी ॥ सर्वसो गव्यादा हाठी जोडी ॥ आ
न हलु बाव मापडी पाडी ॥ स्वामी निसे ठें गणो ॥ ३७ ॥ मापरी
रायें मांनी गाठा ॥ परी उगवला त ही भिमाचा फें सु ॥ रिद्रा परा
धें गौतम क्षो सु ॥ तें सें धे उपावही ॥ ३८ ॥ आंती पाडी वी मत्त
थें ॥ प्रमदा प्रतापी वी सार्थ ॥ आगुची लजा पावली पां रू टी
तें ॥ माहात्म्य नर्थ ही सताहें ॥ ३९ ॥ आता येथुनी सी घमली ॥ ग
मपाय रूपो हे मुक्ती ॥ ऐसें वी चारनी नृपती ॥ ४० ॥
वादे ॥ ४१ ॥ आवडी देउनी आळी गका ॥ मत्पे

३

40

गुण॥ छत्रचापरेसीबीकायाण॥ हासहासी
 प्रधानचातुरंगसेना॥ कृष्णसुहृदवीरार्द्रज
 लोत्पस्थाना॥ लुब्धुन्याययासंभ्रमे॥ ४२॥ ऐसेबो
 जाळा॥ दळेसीनगरप्रवेशावा॥ मार्गेंमुदुर्तानंतरेआळा॥ कृष्ण
 रक्षीआप्रासा॥ ४३॥ उरुसंसेगेहीकान्यीत॥ बाहीरनयेसज्या
 न्यीत॥ हेंदेखोतीसर्वसनाथा॥ जापावांजाळामानसी॥ ४४॥
 जामातकन्यामेश्रुतगहावा॥ तपोनेदेखीवीरीसागदष्टी॥ पर
 मसंतोकासानुनीष्टष्टी॥ आपासीतकुमरीतें॥ ४५॥ मृपो
 मासीयेनीजामजे॥ बाहेरीपदेसाडुनीछजे॥ रतीव्येहोतें
 तेसहजे॥ सीधीनेछेप्रावळ्ये॥ ४६॥ जेंजाचेतेवहुंतबखरेवें
 मान्येचेतेमासीयेजीवें॥ कष्टीनमीवेतेंप्रभावे॥ पुर्वदेवें
 जोषेळा॥ ४७॥ दशतुमहवरप्रसादे॥ गौरवीअसीवचिन

ॐ श्री ॥

शब्दे ॥ १ ॥ श्री बाबु परम आबहा दे ॥ श्री रंजी वत वं भर्ता ॥ ४ ॥
 धै कोनी पीत प्राची आभये वा नी ॥ ५ ॥ न्याये उनी गगे चरणी ॥
 मृजे प्रयावरी साभु पाळग पति ॥ तोया मात्पे रावा ॥ ६ ॥ ॥ ॥
 श्री सुरेशा सारी ये ॥ दोबे जाला भादू मसुरवे ॥ कीछु हा नी
 समा नलु रे ॥ ऐसा पुत्र ही जाली ॥ ७ ॥ भासो तो यी धरो नी ही
 यस्तु ॥ चढतां वाढतां मासा नाला ॥ सुपक्षी तार शधी सु ॥ ८ ॥ श्री
 पावे पै जै सा ॥ ९ ॥ बरी न हो पावली ॥ पावे ता जा ज पुं जे जनन
 धराम उकी दे दीप्य मान ॥ १० ॥ भात भातु जत्र ठे ॥ ११ ॥ श्री प्रस
 हनी पान बाची सुती ॥ सपदा कंगु ज सं पती ॥ हां कुत बाये उहां
 ती ॥ भार शता मा जत्र वा ॥ १२ ॥ सुवक्षणी वरा ज कु मरा ॥ दे
 र्यो नी कण वरु पे म्य रा ॥ जाती न मा ही सं स्कारा ॥ १३ ॥
 आदरे ॥ १४ ॥ चक्रां श्री त सु ठा वटु स्था ॥ १५ ॥

आ ७९६

४

5

5A

कुदंत ॥ अजान बाहो सु हो भीत ॥ वृहा रा ह्य
 मार सफु मार देव गभो म ॥ श्री ती प्र सा दे वी ज ये सा
 धर्म त रु चा यो भ ॥ अ राम उ बी उ ग व ठा ॥ ६८ ॥ सी को द र ता ठान
 मान ॥ उं च मु धी ब ल व लुं ध न ॥ उ ध र रे र य मं डी ल जा पा ॥
 वृ ह र वी स्ती प र सा जी ता ॥ ६९ ॥ सा मु द्री के उ द्दी तां दृ ष्टी ॥ प र
 प्र भा लु ठा द र पी न्या रो वी ॥ अ म न तं नु पौ गो ष्टी ॥ भ वी द्या ची
 ऐ क पां ॥ ७० ॥ सा ग र मे र क यो पृ थ वी ॥ भ रा प्पे भो गी ठा प्र
 ता प र वी ॥ दो र व रा ज मां चो री न ती ॥ प र थ ऐ न्ने प ठ ती ॥ ७१ ॥
 श ष्ट मा ब र हा ष र तां गु पा ॥ नो प यो लु के वी च रे व नी ॥ व्या प्र
 सी नु ब रा ह ऋ पी ॥ म त कुं ज र म ही द्या ही ॥ ७२ ॥ अ र नी जा पा रि
 र पी भ क्त मी ॥ बां धो नी धा षी म प्र द मी ॥ सा ब री व ळ धो नी प
 रा ऋ मी ॥ सै रा वै रा धां व ही ॥ ७३ ॥ नु र क्था प रा चो ग पा ॥

आदी ०१॥

आप ६

6

बढे करी स्याचे दम पा॥ सा जगिठे वी ठे आ भी धान॥ सर्व दम
 पा कामु पा॥ ६२॥ धनुष्य कोटी ने आतु र्वकी॥ गंगा ज्ञानी ठी
 आत्त मान बळी॥ पर्वत ठो दुनी मही तळी॥ समान व्रनी ही ज
 वषा॥ ६३॥ ऐसी रिं द्रास मा पा र्ने॥ आमा तु स्ये आती उ त मे॥
 त सी ने दे स्यो पा म नो ध र्ने॥ वी वा र श री सी ध्या सी॥ ६४॥ आ
 हो मु वरा ज्ये दे तां स म यो॥ स य र्ने ति र्दे यो ग्य त न यो॥ त्रै लो क य
 जी शो नी धी ग बी ज यो॥ श री उ त म ता री॥ ६५॥ मी त या भे टा
 ब या कु म र॥ आ स जे तां नी ज म र्ने त॥ इ तु के न वं न्ये चा स पा भा
 र॥ उ ती प जि लो म म धे॥ ६६॥ सुं द र प्रा ये सुं द र व पा ता॥
 नी र पा ष्ठी कु ग्ग ही व स तां॥ गो र्नी दे चा आव ची ता॥ पा र्ण
 पा वी से म स र्नी॥ ६७॥ हो प्रं उ त मा ची कु म री॥ ब द म र्ने व र्नी
 तां मा हे री॥ उ ऋ व ता हो मे वी ही ता चा री॥ ता ही र्ने

६

आदी०१

(४)

स्थिर ॥ आणीक माहाकुभावगुरु ॥ भजनी गोवर्द्धनी द्याचा सोस ॥
 माजेशोर आभीष्टापे ॥ ७६ ॥ महेंदार्क राठे वीजी जेशे ॥ आवस्ये
 रीचकी कागगे छटेशे ॥ वीश्यासुखकी ठेवी तांबनी तले ॥ तंश च
 वीपरीत उद्भवें ॥ ७७ ॥ तुष्टो हठे वपंश वपासी ॥ प्राये वीजे तेव
 सुची तैसी ॥ वृत्ती जाणे नीर्मिष्ठि जगसी ॥ भ्रमा वया भ्रमयंत्र ॥ ७८
 भ्रमसोत संसारी यां जागे वरी ॥ ७९ ॥ वती जो उत मरा हादी ॥ मा
 सी शंखा हे गोमदी ॥ सुती व वती वी वृता ॥ ८० ॥ सीखा स्थानी
 च सापुरीरी ॥ भ्रतार गृही पती वारी ॥ शोभा आचये ता मां त्पे
 ता थोरी ॥ ८१ ॥ भ्रमणे वी ते पाये ॥ ८२ ॥ पावागी ही जतो समुदा
 ये सी ॥ सपुत्र हां कुतळा सरी सी ॥ ते उनी नीचे दारा मासी ॥ हस्त
 तां वरी आवी विये ॥ ८३ ॥ आतां शंखा ठे उं नये येथे ॥ हे नये आसु
 चे उंचीता ॥ तुष्टी जा उनी यां तेशे ॥ ज्वाची सातें समुदा

आ०१६

E

78

नसी आहने ता पस मेका ॥ सती तभर थरा कुंटा ॥
 मा पाता छे जोका ॥ जो देवती को लुत्रे ॥ ८३ ॥ सभाम र
 पती ॥ मुजी बरा सी राजे पती ॥ राज कुमर धरु नी हाती ॥ भेट
 वी वास नु र ॥ ८४ ॥ आसी वचन जम जम पर ॥ कत नी ये सवा
 तपी भार ॥ हा कुंटा का भानु मर ॥ प्र सी धर नी आदरे ॥ ८५ ॥ ब
 को र ये वा वप्ये रु पी ॥ ल कुंटा का वा ज न क च र पी ॥ नु पो र
 ज मां आं सा स नी ॥ वा व दे र नी वा ॥ ८६ ॥ ब हुं ल ही ब स पा ही
 जी वा टा ॥ नी छु र न ये सी कां वा ॥ आ तां ग ह स्या मी ग ह व री
 प ॥ ग ह हा जा वा आ पु वी मां ॥ ८७ ॥ स से प्र ती हा न रें शो त मा ॥ आ ह
 उ नी आ तु वी मा ने मा ॥ यु व रा जी भ र ल ना मा ॥ पु त्र आ पु टा आ
 भी हो की ॥ ८८ ॥ वी ज्ञा मु नी प्र ण्या प्र नी ॥ जो आ र्थ प्र थी वा वा गे
 मी ॥ तो म का वी क्री मा ध र्मी ॥ क र नी दा वी ये थार्थ ॥ ८९ ॥

स्वाही ०॥

स्वा ०१६

७

(8)

ऐहोनीहं कुतलवेचे वचण ॥ ये बुधावर्माची आठवण ॥ मने जा
 णतां अथवा ॥ जाणने पाताताहावी ॥ ७० ॥ चोरीजुरीअनाचार
 २२मीनाहिमृपावीनरा ॥ तेसा नाये वृनरे श्वरा ॥ आवगणनेपी
 वा ॥ ७१ ॥ साकुनीररीतीसाचरणा ॥ बायेबोठतीधर्मवशण ॥
 तेवीआवगुणआच्छुन ॥ गोपयेंआनुवादे ॥ ७२ ॥ मृपोतुं
 येचीतापसी ॥ कोणकुळरवणदेनी ॥ कोणफाळीयक्रांतवासी
 संगजावामीनेणो ॥ ७३ ॥ नेणतांसीबासुहृदजना ॥ येसेनी
 जावीसमसांगणा ॥ सेसीजणतालेछगना ॥ कोणतेंथेहा
 रववी ॥ ७४ ॥ देवग्रामुणआगतीवेदे ॥ साह्वीवृत्तनीवजीववृ
 थ ॥ धर्मकार्थिसिमेंथ ॥ आवायेसामीनेणो ॥ ७५ ॥ मास्ते
 नीवयेवयेसमाणा ॥ ताळसुंदवळसंपना ॥ स्वल्पचाळहाव
 दन ॥ येसाप्रसवगीसीमद्रेते ॥ ७६ ॥ पाहातांसाध

आदि ०॥

आ० ०१६

१

मृणो धं न्ये गगु र्गो तामा ॥ ३ ॥ त म ए सै रक्षी जे ने मा ॥ व र्म सा क्षी
 ओ तरा सा ॥ ४ ॥ तु त जा वा या व च पो ॥ ४ ॥ म न ने पा तां ना ही पा प
 व की ने पा तां रे चो क्षी प ॥ जी व पो बी पा रे का टे च रो प ॥ पृ थ्वी व
 री को तु नी ॥ ५ ॥ जा पो नी मां हो ने पो ॥ पृ री च या आ स तां पु से
 ल को पा ॥ हे त वं आ ध र्म चं ल क्ष क ॥ ६ ॥ तु ज उ त मा आ यो ग्या ॥ ६
 इ च्च र आ पी जो री वे पु ण ॥ अ र्म नी वो ले य शार्थ व च न ॥ मा
 सी सा क्षी तु से ची म न ॥ तु स आ स री दे ता हे ॥ ७ ॥ अ शार्थ जा पा
 तां आ ताः अ पी ॥ आ न्ये श र्म री जो व च नी ॥ ते पो को पा लं
 पा प अ र पी ॥ रे षी ना ही सां ग य ॥ ८ ॥ मी य न्म जा पा तां सर्व श्रु
 ष्टी ॥ जे सा आ भी मा न वा हा सी रो टी ॥ स प्र व मु र्या चा से व टी
 व र्म व री सी सा लु च ये ॥ ९ ॥ पा प म शं ती क र नी रा ही ॥ मृ ण सी क
 व णं दे री ले ना हि ॥ ई द्री ये दे व ता आ नी दे ती ॥ अं ता र प्र

८

90

तसे ॥१०॥ समर्थादेवतां जे करणो ॥ सा प्रतीकुरु
 णो ॥ तें जो चीदंड पाकी जेतो ॥ हेतवंप्रसीध जाणो ॥
 हीसचें श्रवणीपवण ॥ आकाशपृथ्वी आनी जीवण ॥ हृदयेम
 तेनवेजाण ॥ कृतांताजाणती मरचें ॥ १२ ॥ उभयेसंध्यादीवस
 रजनी ॥ अर्चस्यरुपव्यादाः करणो ॥ सुभासुसनाहाटे प्राणी ॥ ती
 लुपेंदष्टीदेखती ॥ १३ ॥ हेतुश्रीजाण आनुवयावग्री ॥ प्रगट करी
 ती आनुवयाश्री ॥ चीत्ररुपसंखेवपाप्री ॥ सा दृष्टेउनी
 गीहीकीती ॥ १४ ॥ वेदांतीसाधनाधीवीण ॥ ऐसंबोवतीज
 णाभाजाण ॥ साक्षीपरमासाधण ॥ ससाकडेचीनीघरे ॥ १५
 भाणी वृकीपुरहाचीकरणी ॥ आनुर्वर्धारेवेआनुवाप्रवणी ॥
 मुखी वाउनीटार्करावणी ॥ शहस्याहागेधवी ॥ १६ ॥ मोडुनी
 ज्यार ॥ जारीदोघा ॥ यथांतीजाउनीपुरेसंगा ॥ तबंगहमस्ता

आदि ११

श्री ३ भा ॥ दोब पीठुनी जाणवी ॥ १७ ॥ इती के की कर्म करणी ॥ ठाउ
 श्री असो ॥ की आ च्या कणी ॥ यवं कर्म वेठे लेजुणी ॥ आ पे आप की
 सारे ॥ १८ ॥ कर्म सांगे हृदये ॥ क्षेत्र ह आसा चेतन्य नाथ ॥
 ज्याची येहा की संतो प सुक्त ॥ सप्त सा चार स्वधर्म ॥ १९ ॥ सुतं
 दयाळ दंड पाणी ॥ धर्म राज कर जोणी ॥ दो वा सांगे नुपो प्राणी ॥
 उधरीण टा वासा ॥ २० ॥ दुधा जाण र सा चार कुरुमा ॥ देखोनी
 पुठे जां तरासा ॥ सांसी बोडुनी कर्म ॥ दंड वरी सुवध ॥ २१
 ऐयं हृदये सु जाणसा ॥ आनी ननु यतन मोवासा ॥ साचेनी साक्षी
 वं प्राणीसां ॥ वेठी कर्म भोगवी ॥ २२ ॥ मृगोनी चर पाप सु साचें
 वेद वडी ठगे कनी देचे ॥ भ्रम धरुनी जो साचें ॥ वर्तिसाचे लोवी वे
 की ॥ २३ ॥ आतां आस सेवर्ष तां लळा ॥ उभा न राहे कुंभी पीपाक
 तरी पुडे लवजु सीळा ॥ परमाप की ती दोहाची

आ० १६

९

१०



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com